वह व्यक्ति पूर्ण रूप से सामान्य है, जोकि किसी भयानक आधातों या निराशा उत्पन्न करने वाली परिस्थितियों आदि पर विजय प्राप्त कर लेता है, जबकि असामान्य वह है जो कष्टप्रद, प्रक्रियात्मक एवं दुखद व्यवहार होता है। ऐसे व्यवहार ना केवल सामाजिक मानकों को विचलित करते हैं बल्कि उपयुक्त समृद्धि एवं क्रियाशीलता में भी बाधक होते हैं। अर्थात असामान्य व्यवहार वह है जो 'सामान्य से परे' की अवधारणा

को स्पष्ट करता है तथा सामाजिक मापदंडों का उल्लंघन करता है।

सामान्य व्यवहार की विशेषताएं

असामान्य व्यवहार के विषय में जानने से पहले यह आवश्यक है कि हम सामान्य व्यवहार की विशेषताओं को जान लें क्योंकि इसको समझने के बाद ही हम समझ सकेंगे कि सामान्य व्यवहार से भिन्न व्यवहार ही असामान्य है। Sigmund महोदय ने सामान्य व्यवहार के संबंध में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा है कि "वह व्यक्ति पूर्ण रूप से सामान्य है जो कि भयावह आधातों और नैराश्य उत्पन्न करने वाली परिस्थितियों पर

विजय प्राप्त कर लेता है" मैस्लो तथा मीटिलमैन सामान्य व्यवहार की कुछ विशेषताएं प्रस्तुत की है जो निम्नलिखित हैं-

- **जीवन के यथार्थ उद्देश्य (Realistic Life Goals)-** अपनी स्वयं की योग्यता तथा सामाजिक वातावरण की योग्यता का उचित मूल्यांकन करके उसी के अनुसार अपने जीवन के उद्देश्य तय करना ही सामान्य व्यक्ति की एक विशेषता है। इसमें विशेष यह है कि सामान्य व्यक्ति के लक्ष्य उसकी शारीरिक और मानसिक योग्यता के अनुरूप ही होते हैं।

- **सुरक्षा की उपयुक्त भावना (Adequate feeling of security)-** जब किसी व्यक्ति में सुरक्षा की भावना निहित होती है तब ही उस व्यक्ति को पूर्ण रूप से सामान्य कहा जाएगा। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि व्यक्ति में सामान्य परिस्थितियों में सुरक्षित होने की भावना तथा असुरक्षित परिस्थितियों में असुरक्षित भावना का होना सामान्य व्यवहार को दर्शाता है।
- **वास्तविकता से प्रभावपूर्ण संपर्क (Ellicient contact with reality)-** एक सामान्य व्यक्ति अपने आसपास के सामाजिक, भौतिक और मनोवैज्ञानिक

वातावरण को भली प्रकार से जानता है जिसके अनुसार वह अपने आस-पास के वातावरण से संबंध स्थापित करता है।

- **अनुभवों से लाभ उठाने की योग्यता (Ability to learn from past experience)-** कोई भी एक सामान्य व्यक्ति अपनी आने वाली योजनाओं का निर्धारण अपने पूर्व-अनुभवों के अनुसार ही कर पाता है। वह उस planning में पहले हुई गलतियों, त्रुटियों अथवा दुखद अनुभवों को हटा देता है तथा उसके स्थान पर नई एवं उचित तथ्यों को स्थान दे देता है। इस प्रकार से वह, पहले की गयी गलतियों को दोबारा नहीं करता

है या करने से बचता है और लाभदायक अनुभवों को दोबारा दोहराता रहता है।

- **समुचित संवेगावस्था (Adequate emotionality)-** उचित संवेगावस्था का होना सामान्य व्यक्तित्व की विशेषता है। समुचित संवेगावस्था से आशय यह है कि जहां पर जिस संवेग की जितनी अभिव्यक्ति उचित हो, वहां उतनी ही व्यक्त करनी चाहिए। इस प्रकार का ज्ञान यदि व्यक्ति में है तो वह सामान्य व्यक्ति कहलाएगा।
- **व्यक्ति में संगठन और स्थायित्व का होना (Integration and consistency)-**

व्यक्तित्व के संगठन से तात्पर्य यह है कि उसके तीनों पक्ष स्थायित्व होते हैं स्थायित्व से तात्पर्य अति चंचलता के अभाव से हैं अर्थात सामान्य व्यक्ति बिना कारण ही अपने लक्ष्य से विचलित नहीं होते हैं।

असामान्य व्यवहार की विशेषताएं

मैस्लो तथा मिटिलमैन ने सामान्य व्यक्ति की विशेषताओं के साथ-साथ असामान्य व्यक्तित्व की विशेषताओं का भी वर्णन किया है। उनके द्वारा प्रस्तुत की गई असामान्य व्यवहार की विशेषताएं निम्नलिखित हैं-

- **अप्रसन्नता से ग्रसित (Suffering from unhappiness)-** असामान्य व्यक्तित्व वाले व्यक्ति हर समय निराश, परेशान, चिंता से घिरे हुए रहते हैं। उन्हें अपने जीवन में सामान्य व्यक्तियों की भांति प्रसन्नता महसूस नहीं होती है, वे हर समय निराशा और कुंठा से ग्रसित रहते हैं।
- **मनोरंजन के प्रति कम रुचि (Less Enjoyment)-** असामान्य व्यक्तित्व वाला व्यक्ति ज्यादातर दुखी ही रहता है। वह छोटी से छोटी बात पर इतना दुखी और परेशान हो जाते हैं, लगता है मानो कितनी बड़ी मुसीबत उन पर आ गई है,

इसी वजह से वैसे व्यक्तियों में मनोरंजन के प्रति कोई रुचि नहीं दिखाई पड़ती है।

- **असामान्य व्यवहार या व्यक्तित्व कुछ विशिष्ट लक्षणों से युक्त होता है (some specific symptoms are present in abnormal personality)-** असामान्य व्यवहार में कुछ विशेष प्रकार के लक्षण पाए जाते हैं। यह लक्षण पूर्ण रूप से सामान्य व्यक्तित्व से पूर्णतः भिन्न होते हैं। ऐसे व्यक्तियों की शारीरिक एवं मानसिक योग्यता और व्यक्तियों से निम्न स्तर की होती है। इन व्यक्तियों के शारीरिक बनावट भी सामान्य व्यक्तियों की अपेक्षा अलग होती है तथा

इन व्यक्तियों का व्यवहार भी सामान्य व्यक्तियों से अलग होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि किसी भी व्यक्ति की असामान्यता उसके व्यवहार, हाव-भाव आदि द्वारा दिखाई पड़ती है।

- **दक्षता की अपेक्षाकृत कम कार्यक्षमता (Less Efficiency)-** असामान्य व्यवहार वाले व्यक्तियों में क्षमता की बहुत कमी होती है। ऐसे व्यक्ति अपने शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पाते हैं तथा इन आवश्यकताओं के प्रति उनकी कोई विशेष रुचि भी नहीं होती है। वह किसी भी कार्य में, चाहे वह व्यावसायिक कार्य हो,

सामाजिक हो या फिर धार्मिक हो, सामान्य व्यक्तियों की अपेक्षा बहुत कम रुचि लेने वाले होते हैं। अधिकांश मानसिक रोगियों में इस तरह की दक्षता बहुत कम होती है।

उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट है कि सामान्य एवं असामान्य व्यक्ति के व्यवहारों में कुछ खास भिन्नताएं होती है। सामान्य व्यक्ति का व्यवहार समाज के अधिकांश लोगों की तरह तथा अपने चारों तरफ के वातावरण से मेल खाने वाला एवं समायोजी व्यवहार होता है। असामान्य व्यक्तियों का व्यवहार सामाजिक मापदंडों का उल्लंघन करने

वाला, कुसमंजित अर्थात 'सामान्य से परे' होता है।